भारत का तटीय एवं द्वीपीय क्षेत्र

- भारत का मुख्य भूमि समुद्र के साथ 6100 km तथा द्वीपों के साथ 7516.61 km. समुद्री सीमा का निर्माण करती है।
- भारत का तटीय क्षेत्र/विस्तार गुजरात से लेकर गंगा-ब्रह्मपुत्र डेल्टा तक हुआ है।

पश्चिमी तटीय मैदान

- विस्तार - गुजरात से लेकर कन्याकुमारी तक
- इसके प० में अरब सागर तथा पूरब में प० घाट पर्वत स्थित है।
- औसत चौड़ाई 64 km.
- कहीं-कहीं प० घाट के कारण यह मैदान काफी संकीर्ण है। मुम्बई के पास इस चौड़ाई मात्र 10 km है जबकि नर्मदा-तापी के मध्य 80 km. है।

1. गुजरात का तटीय मैदान

(i) कच्छ का मैदान - 6 माह तक जल प्लावित
- समुद्री जल से नमक का निर्माण
- भूकंप प्रभावी क्षेत्र
- भूकंप निर्मित वलन का प्रमाण

(ii) काठियावाड़ का मैदान - इसके मध्य में गिर की पहाड़ी स्थित है।
- लावा निक्षेपण का निर्माण

2. कोंकण तट

- दमन से गोवा तक विस्तृत
- मुम्बई इसी तट पर अवस्थित
- कोंकण रेलवे का विकास इसी तट के सहारे
- मर्मागाँव, न्हावासेवा जैसे बंदरगाह

3. कन्नड़ तट

- कर्नाटक में स्थित है।
- प० घाट के कारण यह अति संकीर्ण तटीय मैदान कहलाता है
- इस मैदान के पूरब में गरसोप्पा जलप्रपात अवस्थित

4. मालाबार तट

- विस्तार - मंगलौर से कन्याकुमारी
- विशेष स्थलाकृति कयाल का विकास हुआ है।

ID - 47041793
Passc - 123

प० तटीय मैदान की सामान्य विशेषताएँ

1. यह मैदान सीधा है।
2. इस मैदान में जगह-जगह बालू के टीले मिलते हैं
3. ढाल पूरब से प० की ओर
4. ज्वारनद मुख का निर्माण
5. पर्याप्त वर्षा के कारण आर्द्र जलवायु
6. अधिक वर्षा के कारण मिट्टी की परत पतली
7. कई प्राकृतिक पोताश्रय का निर्माण

8. क्याल स्थलाकृति का विकास

गुजरात के तट पर उत्थान व कोंकण तट पर निमज्जन का प्रमाण

पूर्वी तटीय मैदान

- पूर्वी घाट पर्वत से बंगाल की खाड़ी तक
- इसका उत्तरी विस्तार गंगा-ब्रह्मपुत्र डेल्टा - से कन्याकुमारी
- उत्तरी सरकार तट — उड़ीसा में विस्तृत — कलिंग का मैदान भी कहलाता
- कोरोमंडल तट — आंध्रप्रदेश व तमिलनाडु राज्य में
  - तमिलनाडु में इसे पायन घाट कहा जाता है।

सामान्य विशेषताएँ

1. प० तटीय मैदान के तुलना में काफी चौड़ा
2. यह मैदान वक्राकार है।
3. इस मैदान में नदियाँ बड़े-बड़े डेल्टा का निर्माण करती है।
4. इस भाग में चिलका, पुलीकट, कोलेरू जैसे झील
5. यह नदियों के कारण काफी कटा-छटा है।
6. कोरोमंडल तट पर निमज्जन का प्रमाण
7. कोरोमंडल तट के कावेरी डेल्टा क्षेत्र उर्वरता के लिए प्रसिद्ध

द्वीपीय क्षेत्र

- भारत में तटीय मैदान के नजदीक तथा उनसे दूर कई द्वीपों का विकास हुआ है।

बंगाल की खाड़ी के द्वीप — 572 द्वीप हैं

(i) तट के समीप स्थित द्वीप

- गंगा नदी के मुहाना पर — गंगा सागर
- न्यूमूर द्वीप
- व्हीलर द्वीप (उड़ीसा, चांदीपुर) — महानदी के मुहाना पर
- क्रोकोडाइल द्वीप — मन्नार की खाड़ी
- हेयर द्वीप — तूतीकोरिन के पास (TN) — प्रवाली द्वीप
- पम्बन द्वीप — तमिलनाडु
- श्रीहरिकोटा — नेल्लोर के तट पर - पुलीकट झील में अवस्थित (AP)

(ii) तट से दूर स्थित द्वीप

- अंडमान व निकोबार - प्रमुख द्वीप
- ✓ 300 द्वीप जिसमें निकोबार में 19 द्वीप
- ✓ इस द्वीप समूह की लम्बाई 590km, क्षेत्रफल 8327 km^2
- अंडमान-निकोबार द्वीप समूह का निर्माण असंगठित कंकड़-पत्थर से हुआ है इसका निर्माण हिमालय पर्वत के निर्माण के दौरान अंसरी सीमा के सहारे हुआ है।
- ✓ बैरन - प्रसुप्त ज्वालामुखी, नारकोंडम - मृत ज्वालामुखी द्वीप.
- ✓ इंटरव्यू व रटलैण्ड द्वीप — चूनापत्थर निर्मित
- ✓ अंडमान की सबसे ऊंची चोटी - माउंट सैडल (737m)
  निकोबार की सबसे ऊंची चोटी — माउंट थुलियर (642m)
- लघु अंडमान व Gr अंडमान के बीच डंकन पैसेज
- भारत का दक्षिणतम बिन्दु इंदिरा ~~कॉल~~ प्वाइंट - निकोबार के Gr भाग में स्थित

अरब सागर के द्वीप

(i) तट से नजदीक स्थित द्वीप

- पीरम द्वीप — कच्छ तट पर
- ✓ बुचर, एलीफैंटा — मुम्बई के पास
- हेनरी, केनरी, सेलसेट द्वीप — मुम्बई के पास
- भैसला, पीरम द्वीप — काठियावाड़ तट पर
- ✓ आलियाबेट, खालियाबेट, दिव — नर्मदा-ताप्ती के मुहाना पर
- आदम पुल व पम्बन द्वीप — भारत और श्रीलंका के बीच

- मूल द्वारिका — गुजरात
- खंभेरा द्वीप — महाराष्ट्र
- भटकल द्वीप — मंगलौर

(iii) तट से दूर स्थित द्वीप

- लक्षद्वीप सबसे प्रमुख द्वीप
- केरल से 280 km प० में स्थित
- क्षेत्रफल 29 km^2
- 36 द्वीप जिनमें 11 पर मानव निवास योग्य
- प्रवाल निर्मित द्वीप — ऊंची चोटियों का अभाव
- 11° चैनल लक्षद्वीप को दो भाग में बांटती है उत्तर में अमीनी द्वीप और द० में कन्नानोर द्वीप कहलाता है
- मिनीकॉय द्वीप लक्षद्वीप का सबसे दक्षिणी द्वीप है
- एण्ड्रोट — लक्षद्वीप का सबसे बड़ा द्वीप
- औसत ऊंचाई 9—11 मी०

दक्षिणी प्रायद्वीप और बाह्य प्रायद्वीपीय भाग में मूल भूगर्भिक अंतर

द. प्रायद्वीपीय भाग	बाह्य प्रायद्वीपीय भाग
1. यह विश्व की प्राचीनतम व कठोर चट्टानों से बना हुआ है	1. इसका निर्माण नवीन व कोमल चट्टानों से
2. यह सदा स्थलीय भाग रहा है, कभी भी पूर्ण रूप से समुद्र में नहीं डूबा.	2. इस भाग का जन्म समुद्र के नितल पर हुआ है
3. यह एक दृढ़ भूभाग है, जिस पर विवर्तनिक बलों का विशेष प्रभाव नहीं पड़ा	3. यह लचीला भाग है जिसमें विवर्तनिक बलों का प्रभाव वलन, भ्रंशन के रूप में देखने को मिलता है
4. इस भाग की अधिकांश पर्वत श्रेणियाँ अवशिष्ट पर्वत है	4. इस भाग के पर्वत श्रेणियों का जन्म विवर्तनिक बलों के कारण होने वाले उत्थान से हुआ है अब भी उत्थान जारी है।
5. इस भाग की अधिकांश नदियाँ प्रौढ़ावस्था में है अपने आधार तल को प्राप्त कर चुके है। अतः वे मंद गति से समुद्र में प्रवेश करती है।	5. नदियाँ अभी युवावस्था में है। पर्वतीय भाग गहरे महाखड्डों का निर्माण करते है। ये महाखड्ड अभी भी गहरे होते जा रहे है मैदानी भाग में नदियाँ मार्ग बदलती है।

भाबर तथा तराई में अंतर

भाबर	तराई
1. यह शिवालिक के गिरिपद में सिंधु नदी से तिस्ता नदी तक विस्तृत है।	1. यह भाबर प्रदेश के दक्षिण में स्थित है।
2. चौड़ाई 8-16 km.	2. चौड़ाई 20-30 km.
3. भारी कंकड़, पत्थर, बजरी आदि के जमाव के कारण यह पारगम्य चट्टानों का क्षेत्र है।	3. यह अपेक्षाकृत बारीक कणों वाले जलोढ़ से बना है तथा वनों से ढका प्रदेश है।
4. पारगम्य चट्टानों के कारण अधिकांश नदियाँ भूमिगत होकर अदृश्य हो जाती है।	4. भाबर प्रदेश में भूमिगत नदियाँ तराई प्रदेश में धरातल पर आ जाती है और दलदल पैदा करती है
5. यह कृषि के लिए उपयुक्त नहीं है।	5. वनों को साफ कर कृषि के योग्य बनाया गया है

बांगर तथा खादर में अंतर

बांगर	खादर
1. यह पुराने जलोढ़ मिट्टी का बना हुआ ऊँचा भाग है।	1. यह नवीन जलोढ़ मिट्टी का बना हुआ निम्न प्रदेश है।
2. बांगर प्रदेश बाढ़ के तल से ऊँचा होता है।	2. यहाँ प्रति वर्ष बाढ़ आती है और जलोढ़ की नई परत बिछ जाती है।
3. इसमें चूनापत्थर युक्त कंकड़ की बहुलता है।	3. यह मुख्यतः चीका मिट्टी का बना हुआ है।
4. यह कृषि के लिए बहुत उपयोगी नहीं है।	4. यहाँ गहन कृषि की जाती है।
5. पंजाब के मैदान में इसे धाया कहते हैं।	5. पंजाब के मैदान में इसे बेट कहते हैं।

भारतीय पठार तथा हिमालय पर्वत के उच्चावच लक्षणों में अंतर

भारतीय पठार	हिमालय पर्वत
1. भारतीय पठार कठोर शैलों का प्राचीन भूखंड है।	1. हिमालय कोमल शैलों का नवीन पर्वत है।
2. भारतीय पठार का निर्माण एक उत्खंड के रूप में हुआ है।	2. हिमालय एक मोड़दार पर्वत है जो विभिन्न भूगर्भिक हलचलों से बना है।
इस प्रदेश में अरावली जैसे प्राचीन वलित पर्वत स्थित है।	3. इस प्रदेश में नवीन पर्वत श्रेणियाँ अपने ऊँचे-ऊँचे शिखरों के लिए विश्व प्रसिद्ध है।
4. पठार पर दरारों के कारण घाटियाँ पायी जाती है।	4. इस प्रदेश में तीन समानांतर पर्वत श्रेणियाँ है जिनके बीच में घाटियाँ है।
5. इस प्रदेश का धरातल उबड़-खाबड़ है जिसमें नादियाँ गहरी घाटियाँ बनाती है।	5. इस प्रदेश में नदियाँ गहरी संकरी V आकार की घाटियाँ बनाती है।
भारतीय पठार त्रिभुजाकार है।	6. हिमालय पर्वत एक चाप के रूप में है
इसमें अरावली चट्टानों की बहुलता है	7. इसमें अधिकतर वलित चट्टानें पायी जाती है

पश्चिमी घाट तथा पूर्वी घाट में अंतर

पश्चिमी घाट	पूर्वी घाट
1. यह प० घाट के समानांतर उत्तर से द० दिशा में ताप्ती नदी से कन्याकुमारी तक विस्तृत है।	1. यह पूर्वी तट के समानांतर उ दिशा में उड़ीसा से नीलां.. तक विस्तृत है।
2. औसत ऊँचाई 900 – 1100 मी०	2. औसत ऊँचाई प०घाट से कम (600m)
3. औसत चौड़ाई 50 – 80km	3. औसत चौड़ाई प०घाट से अधिक 100 – 200km.
4. यह दीवार की भाँति खड़ा है, जिसे केवल दर्रों के द्वारा पार किया जा सकता है।	4. बड़ी-बड़ी नदियों ने इसे काटकर अपना मार्ग बना लिया है। यह कई भागों में बँटा है।
5. संरचना की दृष्टि से यह एक संपूर्ण इकाई है।	5. संरचना की दृष्टि से इसमें एकरूपता नहीं पायी जाती है।
6. यह प्रायद्वीपीय पठार पर बहने वाली बड़ी-बड़ी नदियों का स्रोत है	6. पूर्वी घाट में कोई बड़ी नदी का उद्गम स्रोत नहीं है।
7. यह अरब सागर से आने वाली द०प० मानसूनी पवनों के लम्बवत है जिससे प० तटीय मैदान में भारी वर्षा होता है।	7. यह बंगाल की खाड़ी से आने वाली द०प० मानसून पवनों के लगभग समानांतर है जिससे अधिक वर्षा नहीं होती है।
8. लम्बाई = 1600 km.	8. लम्बाई = 1800 km.
9. सबसे ऊँची चोटी – कुद्रेमुख	9. महेन्द्रगिरी
10. यह क्रमबद्ध है	10. यह विखंडित है।
11. 16° उ० के उत्तर लावा का निक्षेपण से और द० में ग्रेनाइट व नीस से निर्मित	11. चारकोलाइट, क्वार्टजाइट और खोंडालाइट नामक चट्टानों से निर्मित
12. प० घाट का पश्चिमी पार्श्व का विकास भ्रंशन के क्रिया से हुआ है इसलिए इसे भ्रंशोत्थ पर्वत के श्रेणी में रखते हैं।	12. इसमें भ्रंशन का प्रमाण नहीं मिलता है बल्कि यह वलित पर्वत का ही अवशिष्ट स्वरूप है।
13. जलप्रपात अधिक है	13. जलप्रपात कम है।
14. एक ढाल खड़ा तथा पूर्वी ढाल मंद	14. दोनों पार्श्व का ढाल एक समान
15. काली एवं लैटेराइट मिट्टी का निक्षेपण.	15. लाल मिट्टी का निक्षेपण.

पश्चिमी तटीय मैदान और पूर्वी तटीय मैदान में अंतर

पश्चिमी तटीय मैदान	पूर्वी तटीय मैदान
1. यह प० घाट तथा अरब सागर तट के मध्य स्थित	1. पूर्वी घाट तथा बंगाल की खाड़ी के तट के मध्य स्थित
2. यह एक संकरा मैदान है जिसकी औसत चौड़ाई 64 km है।	2. यह अपेक्षाकृत चौड़ा मैदान है, जिसकी औसत चौड़ाई 80 - 100 km.
3. इस मैदान में बड़ी छोटी व तीव्रगामी नदियाँ बहती है जो डेल्टा बनाने में असमर्थ है।	3. महानदी, गोदावरी, कृष्णा, कावेरी जैसी बड़ी-बड़ी नदियाँ डेल्टा का निर्माण करती
4. इस मैदान के दक्षिणी भाग में लैगून झीलें पाई जाती है।	4. यहाँ लैगून कम संख्या में है।
5. प० तट अधिक कटा-फटा है जिस कारण यहाँ अधिक बंदरगाह पाए जाते है।	5. पूर्वी तट कम कटा-फटा है, जिस कारण यहाँ बंदरगाह कम है।